पर्यटन विभाग करे पहल तो एग्रो टूरिज्म को भी मिले बढ़ावा

रेत के चमकते कणों के बीच लहलहा रहे नाटे खजूर...स्वागत है आप बीकानेर में हैं

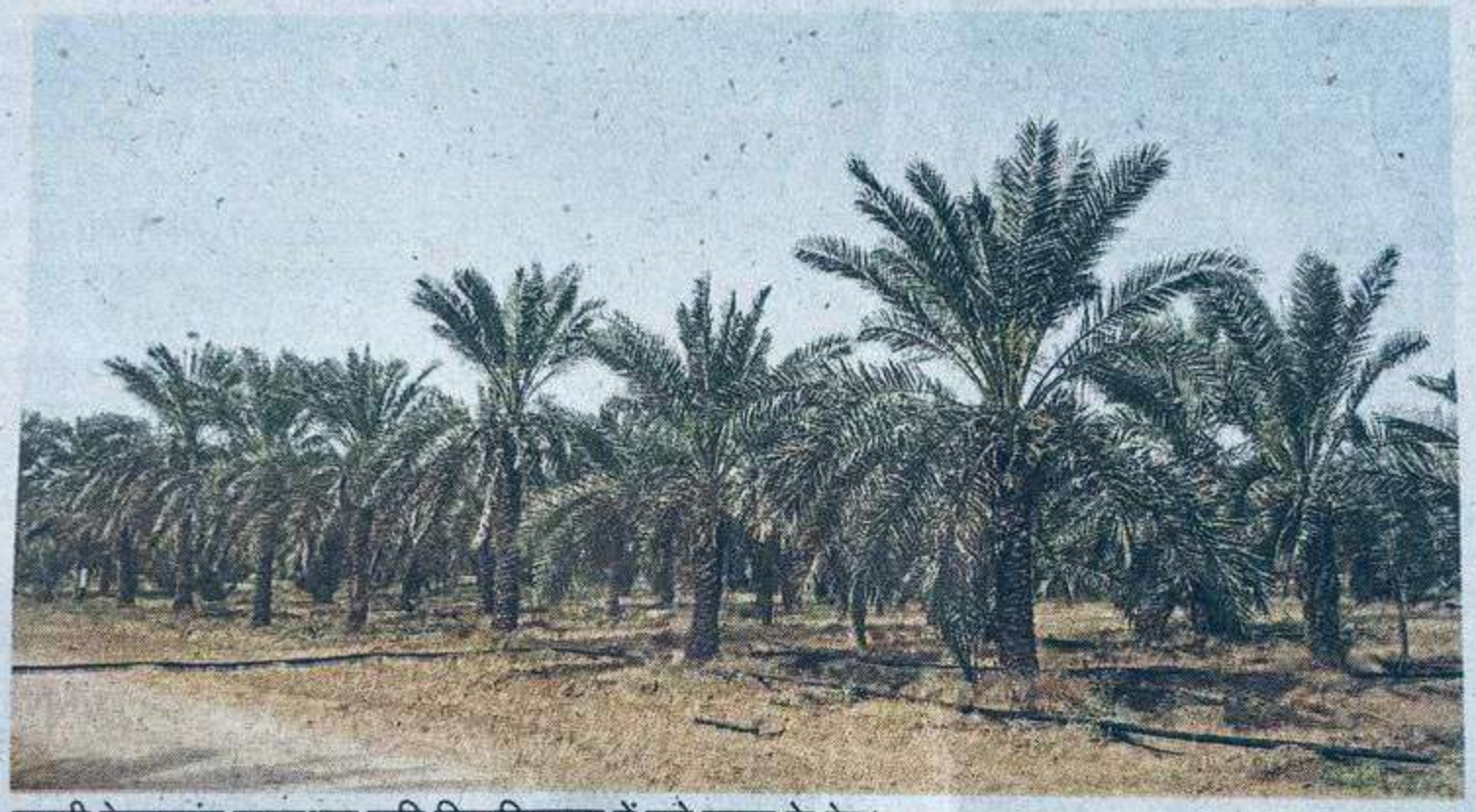

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में लगे खजूर के पेड़।

पत्रिका
अतुल आचार्य
patrika.com

बीकानेर. श्रीगंगानगर से बीकानेर प्रवेश करने के साथ ही लहलहाते नाटे खजूर के पेड़ बरबस ही लोगों को खींचते हैं। नजर दौड़ाने पर ग्रामीण क्षेत्र की तरफ सड़क क़िनारे दूर-दूर तक लगे सोलर पैनल फोटो शूट का बेहतर नजारा उपलब्ध कराते दिखते हैं। यह देख यहां पहली बार या दूसरी बार भी आने वाला सैलानी एक बार अपनी गाड़ी को रोककर फोटो खींचने को मजबूर हो ही जाता है। इसके अलावा इस मरुभूमि में इन दिनों हो रही नई तरह की खेती भी लोगों को आकर्षित कर रही हैं। यह सीन पर्यटन की दृष्टि से बीकानेर के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

बदलते हालात में कृषि पर्यटन की भी अपार संभावनाएं यहां मौजूद नजर आती हैं। जानकार बताते हैं कि जिले में मौजूद ग्रामीण परिवेश की हर वो वस्तु या उत्पाद कृषि पर्यटन है, जो पर्यटकों के लिए नई होती है। कृषि के क्षेत्र में नवाचारों को भी पर्यटन से जोड़ा जा सकता है। पर्यटक पैकेज में भी इसको जोड़ने की जरूरत है। विभाग इस दिशा में सोचे, तो पर्यटकों को एक नया अनुभव मिल सकता है, जो टूरिज्म में बूस्ट का काम कर सकता है।

प्लान बनाकर कार्य करने की आवश्यकता

दरअसल, लोगों खास कर सैलानियों को यहां का नेचुरल व्यू भाता है। पिछले कुछ समय से एग्रो टूरिज्म के व्यवसाय में भी बढ़ोतरी देखने को मिली है। कई लोगों ने कई एकड़ जमीनें लेकर लेकर कृषि कार्य की तरफ नवाचार भी किया है। ऐसी पहल भविष्य में कृषि पर्यटन को उद्योग के रूप में भी विकसित करने की संभावना को जगाता है।

टॉपिक एक्सपर्ट

सुविधाएं विकसित करने की जरूरत

डॉ अरुण कुमार,
कुलपति,
एसकेआरए
यूनिवर्सिटी

राजस्थान में कृषि पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर परिसर में खजूर, बेर, अनार, बील इत्यादि के बगीचे, मशरूम उत्पादन इकाई, हाईटेक नर्सरी, बाजरा और अन्य मोटे अनाज उत्पाद प्रसंस्करण इकाई, शहद बनाने की तकनीक, फल व सब्जियों के मूल्य संवर्धन उत्पाद पर्यटकों को खासा आकर्षित कर सकते हैं। इसके अलावा किन्नू के बगीचों के बीच रहने की सुविधाएं विकसित कर दी जाएं, तो पर्यटक किन्नू खाने का लुत्फ उठाने के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद ले सकेंगे। ग्रामीण इलाकों में धोरों पर परंपरागत झोपड़ी इत्यादि बनाकर रहने की पर्याप्त सुविधाएं विकसित कर दी जाएं, तो देशी विदेशी पर्यटकों को खासा आकर्षित किया जा सकता है।

यहां लगे हैं एक हजार से अधिक पेड़

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय भी पर्यटन सर्किट में शामिल हो सकेता है। यहां पर खजूर अनुसंधान केंद्र में 54 प्रजातियों के करीब एक हजार बड़ें तो 200 छोटे पेड़ लगाया गए हैं। इसके अलावा अनार, बील और बेर का बगीचा, साथ ही मशरूम की इकाई व बाजरा प्रोसेसिंग यूनिट भी अपने आप में आकर्षण का केंद्र है।

इन पर किया जा सकता है विचार

- पर्यटकों के लिए फार्म टूर
- फार्म-टू टेबल अनुभव
- कार्यशालों और प्रदर्शनी का आयोजन
- एग्री टूरिज्म आवास

कृषि पर्यटन में अपार संभावना

एग्रो टूरिज्म की दिशा में राजस्थान ग्रामीण पर्यटन नीति काफी सहायक सिद्ध हो सकती है। बीकानेर में आने वाले समय में कृषि पर्यटन में अपार संभावना नजर आ रही है। इसको लेकर पर्यटन विभाग से संपर्क किया जा सकता है।

अनिल राठौड़, उप निदेशक, पर्यटन विभाग बीकानेर

टॉपिक एक्सपर्ट

सुविधाएं विकसित करने की जरूरत

डॉ अरुण कुमार,
कुलपति,
एसकेआरए
यूनिवर्सिटी

राजस्थान में कृषि पर्यटन की असीम संभावनाएं है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर परिसर में खजूर, बेर, अनार, बील इत्यादि के बगीचे, मशरूम उत्पादन इकाई, हाईटेक नर्सरी, बाजरा और अन्य मोटे अनाज उत्पाद प्रसंस्करण इकाई, शहद बनाने की तकनीक, फल व सब्जियों के मूल्य संवर्धन उत्पाद पर्यटकों को खासा आकर्षित कर सकते है। इसके अलावा किन्नू के बगीचों के बीच रहने की सुविधाएं विकसित कर दी जाएं, तो पर्यटक किन्नू खाने का लुत्फ उठाने के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद ले सकेंगे। ग्रामीण इलाकों में धोरों पर परंपरागत झोपड़ी इत्यादि बनाकर रहने की पर्याप्त सुविधाएं विकसित कर दी जाएं, तो देशी विदेशी पर्यटकों को खासा आकर्षित किया जा सकता है।

प्रेस नोट

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

एसकेआरएयू में प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

गुजरात और राजस्थान के माननीय राज्यपाल करेंगे शिरकत

बीकानेर, 28 अगस्त। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर में 29 और 30 अगस्त को प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बुधवार को कृषि विश्वविद्यालय के आईएबीएम सभागार में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि कार्यक्रम में राजस्थान के राज्यपाल माननीय श्री हरिभाऊ बागड़े और गुजरात के राज्यपाल माननीय श्री आचार्य देवव्रत शामिल होंगे। इनके अलावा केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल , केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी , पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री देवी सिंह भाटी , महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित, राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ ए.के.गहलोत भी शिरकत करेंगे। संगोष्ठी में इनके अलावा देशभर के प्रतिष्ठित कृषि वैज्ञानिक, शोधकर्ता और किसान शामिल होंगे।

कुलपति डॉ अरुण कुमार ने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्या मंडप में आयोजित इस संगोष्ठी का उद्घाटन 29 अगस्त को सुबह साढ़े दस बजे राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागड़े करेंगे। इस दौरान माननीय राज्यपाल स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का लोकार्पण भी करेंगे। यह मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से छुटकारा दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। जिसे अत्यंत कम लागत में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किया गया है। जल्द ही इसका व्यावसायिक उत्पादन शुरू किया जाएगा। संगोष्ठी के आयोजन का मुख्य उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक खेती की विधियों के प्रति जागरूक करना और इसे अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञों द्वारा विषय विशेष पर प्रस्तुति दी जाएगी और प्राकृतिक खेती में सफल किसानों के अनुभव भी साझा किए जाएंगे।प्रेस कॉन्फ्रेंस में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी , कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव, प्रसार निदेशक डॉ पी.एस.शेखावत , सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विमला ढुकवाल , अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश , आईएबीएम निदेशक डॉ आई.पी.सिंह , डीन पीजी डॉ राजेश कुमार वर्मा , डॉ वी.एस.आचार्य और कृषि विश्वविद्यालय पीआरओ श्री सुरेश बिश्नोई भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम संयोजक एवं कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने बताया कि संगोष्ठी के पहले दिन प्राकृतिक खेती परिचय व महत्व विषय पर तकनीकी सत्र का आयोजन कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में विद्या मंडप सभागार में दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक किया जाएगा। जिसमें प्राकृतिक खेती की आवश्यकताएं , आयाम, अवधारणा, प्राकृतिक खेती में देशी बीजों एवं मोटे अनाज का महत्व , प्राकृतिक खेती के तहत गन्ना उत्पादन , प्राकृतिक खेती और आयुर्वेद , जैविक खेती एवं प्राकृतिक खेती के अनुभव विषय पर देश भर से आए विषय विशेषज्ञ अपना व्याख्यान प्रस्तुत करेंगे। साथ ही प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की सफलता की कहानी बताई जाएगी। शाम साढ़े 5 बजे से 6 बजे तक पोस्टर सत्र और शाम साढ़े 7 बजे से 9 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आय़ोजन किया जाएगा।

डॉ यादव ने बताया कि संगोष्ठी के दूसरे दिन गुजरात के राज्यपाल माननीय श्री आचार्य देवव्रत संगोष्ठी के समापन अवसर पर शाम करीब 4 बजे शिरकत करेंगे। उससे पूर्व सुबह 10 बजे से दोपहर 12.40 तक प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण विषय पर तकनीकी सत्र द्वितीय का आयोजन महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में आयोजित किया जाएगा। जिसमें प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण , सफलता की कहानी और बागवानी में प्राकृतिक खेती का उपयोग के बारे में बताया जाएगा।

कार्यक्रम सचिव डॉ वी.एस.आचार्य ने बताया कि तकनीकी सत्र तृतीय का आयोजन दोपहर 1.30 बजे से 2.30 बजे तक प्राकृतिक खेती परिणाम,कृषक अनुभव, कृषक संवाद का आयोजन राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ ए.के.गहलोत की अध्यक्षता में आयोजित किया जाएगा। जिसमें बीज प्रबंधन और कीट नियंत्रण के सरल उपाय , भूमि सुपोषण व गोबर , गोमूत्र प्रबंधन, जैविक खेती व उसका प्रमाणीकरण प्रक्रिया विषय पर विषय विशेषज्ञ जानकारी देंगे। इसके बाद कृषक अनुभव व कृषक संवाद का आयोजन होगा। डीन पीजी डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।